

शिक्षक छात्र संबंधो का छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

डॉ. शिखा जैन, अभिलाष कुमार जैन

सारांश

विद्यालय छात्रों के समग्र विकास में शिक्षक-छात्र संबंधों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यह संबंध न केवल शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करता है, बल्कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, सामाजिक समायोजन और भावनात्मक स्थिरता पर भी गहरा प्रभाव डालता है। वर्तमान शोध का उद्देश्य यह जानना है कि शिक्षक-छात्र संबंधों की गुणवत्ता किस प्रकार विद्यालयीन छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। अध्ययन में 13–17 वर्ष आयु वर्ग के 200 छात्रों को शामिल किया गया, जिनका चयन यादचिक नमूना पद्धति से किया गया। डेटा संग्रह हेतु "मानसिक स्वास्थ्य सूची" तथा "शिक्षक-छात्र संबंध मापक" का प्रयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि जिन छात्रों का अपने शिक्षकों से सकारात्मक संबंध था, उनमें आत्म-सम्मान, आत्म-नियंत्रण और सामाजिक अनुकूलन के उच्च स्तर पाए गए, जबकि जिनका संबंध नकारात्मक था, उनमें चिंता, तनाव और आत्महीनता के लक्षण अधिक थे। विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षक का स्नेहपूर्ण व्यवहार, संवाद क्षमता और निष्पक्ष मूल्यांकन छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करते हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि शिक्षकों द्वारा सृजनात्मक, सहयोगात्मक एवं भावनात्मक रूप से समर्थ वातावरण प्रदान करने से छात्रों में सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य का विकास संभव है। इस प्रकार शिक्षक-छात्र संबंध विद्यालयीन जीवन का एक केंद्रीय तत्व है जो विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक भलाई का आधार बनता है।

मुख्य शब्द: शिक्षक-छात्र संबंध, मानसिक स्वास्थ्य, विद्यालयीन छात्र, भावनात्मक स्थिरता, सामाजिक अनुकूलन।

1. प्रस्तावना

1.1 विषय की पृष्ठभूमि

विद्यालय केवल ज्ञानार्जन का केंद्र नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, भावनात्मक परिपक्तता और सामाजिक व्यवहार के निर्माण का भी प्रमुख स्थल है। विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षक वह व्यक्ति होता है जो उनके व्यवहार, सोच, और आत्म-छवि पर गहरा प्रभाव डालता है। इसीलिए शिक्षक-छात्र संबंध का स्वरूप विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है।

विद्यालयीन छात्रों का जीवन अनेक दबावों और अपेक्षाओं से भरा होता है—अध्ययन का बोझ, परीक्षा का तनाव, सहपाठियों से प्रतिस्पर्धा, पारिवारिक अपेक्षाएँ आदि। इन परिस्थितियों में यदि शिक्षक एक संवेदनशील, सहयोगी और समझदार भूमिका निभाता है तो वह छात्र के लिए एक भावनात्मक सहारा बन जाता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक के व्यवहार में

असंवेदनशीलता, अनुशासनात्मक कठोरता या पक्षपात है, तो यह छात्र के मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।

1.2 मानसिक स्वास्थ्य का महत्त्व

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य केवल मानसिक रोगों की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं को पहचान सके, जीवन के सामान्य तनावों से निपट सके, उत्पादक रूप से कार्य कर सके और समाज में योगदान दे सके। विद्यालयीन छात्रों के संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है—अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्म-नियंत्रण, सहपाठियों से स्वस्थ संबंध, तथा तनाव प्रबंधन की क्षमता।

1.3 शिक्षक-छात्र संबंध की अवधारणा

शिक्षक-छात्र संबंध (Teacher-Student Relationship) दोतरफा भावनात्मक और सामाजिक बंधन है जो शिक्षक की देखभाल, स्वेच्छा, समानता, और मार्गदर्शन पर आधारित होता है। यह संबंध विश्वास, सहयोग और संवाद की भावना से संचालित होता है। एक सशक्त संबंध छात्रों को सुरक्षा, प्रेरणा और आत्म-सम्मान प्रदान करता है।

1.4 विद्यालयीन संदर्भ में प्रासंगिकता

भारत जैसे देश में जहाँ शिक्षा प्रणाली अब भी परीक्षा-केंद्रित है, वहाँ शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान-प्रदाता की नहीं बल्कि "मार्गदर्शक" की भी है। जब शिक्षक छात्र की समस्याओं को समझता है, उसके विचारों का सम्मान करता है और उसे खुलकर अभिव्यक्ति का अवसर देता है, तब छात्र में आत्मविश्वास का विकास होता है। यह संबंध एक प्रकार की मानसिक सुरक्षा प्रदान करता है, जो अवसाद और चिंता जैसी समस्याओं से बचाव में सहायक होती है।

1.5 समस्या का कथन

वर्तमान समय में विद्यालयों में बढ़ता तनाव, परीक्षा संबंधी दबाव और प्रतिस्पर्धा ने छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को चुनौती दी है। ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि शिक्षक-छात्र संबंध इस मानसिक दबाव को किस हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। क्या सकारात्मक संबंध मानसिक स्वास्थ्य को सुट्ट बनाते हैं? क्या नकारात्मक संबंध छात्रों में मानसिक असंतुलन को बढ़ाते हैं? यही प्रश्न इस अध्ययन की आधारशिला हैं।

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

शिक्षक-छात्र संबंधों की प्रकृति का अध्ययन करना।

शिक्षक-छात्र संबंधों का छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव ज्ञात करना।

लिंग, कक्षा स्तर एवं विद्यालय के प्रकार के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य में अंतर की पहचान करना।

1.7 अध्ययन की उपयोगिता

यह अध्ययन विद्यालयी शिक्षा में शिक्षक-छात्र संबंधों के महत्व को रेखांकित करता है। इसके निष्कर्ष शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, परामर्श सेवाओं और विद्यालय नीतियों में मानसिक स्वास्थ्य-संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होंगे।

2. साहित्य समीक्षा

शिक्षक-छात्र संबंधों और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध को समझने के लिए अनेक भारतीय एवं विदेशी अध्ययनों ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य समीक्षा के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक का व्यवहार, संवाद शैली, सहानुभूति, और भावनात्मक सहयोग विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करते हैं। नीचे विभिन्न विद्वानों के प्रमुख निष्कर्षों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

1. डॉ. अरुणा शर्मा (2015) अपने शोध "विद्यालयों में शिक्षक-छात्र संबंध और विद्यार्थियों का भावनात्मक संतुलन" में डॉ. शर्मा ने यह पाया कि जिन छात्रों को अपने शिक्षकों से स्नेहपूर्ण व्यवहार और समझ प्राप्त होती है, उनमें चिंता, हीनभावना और आक्रोश का स्तर कम पाया गया। उनके अध्ययन में 300 माध्यमिक स्तर के छात्रों को शामिल किया गया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि शिक्षक यदि छात्रों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझें और सहानुभूति रखें तो छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उल्लेखनीय रूप से बेहतर हो सकता है।

2. डॉ. ओमप्रकाश मिश्रा (2017) मिश्रा ने अपने अध्ययन "शिक्षक-छात्र संवाद का छात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिरता पर प्रभाव" में यह बताया कि शिक्षकों के साथ खुला संवाद और समर्थन का वातावरण विद्यार्थियों में आत्म-नियंत्रण और आत्म-सम्मान को बढ़ाता है। उन्होंने यह भी कहा कि संवाद की कमी छात्रों में संकोच, तनाव और अवसाद की स्थिति उत्पन्न कर सकती है।

3. डॉ. सीमा अग्रवाल (2018) "विद्यालयीन परिवेश में शिक्षक के व्यवहार और छात्रों का मानसिक संतुलन" शीर्षक अध्ययन में उन्होंने पाया कि शिक्षक की अनुशासनात्मक कठोरता, उपेक्षा अथवा पक्षपात छात्रों में मानसिक अस्थिरता और नकारात्मक भावनाएँ उत्पन्न करती हैं। वहीं जब शिक्षक व्यवहार में निष्पक्षता, प्रोत्साहन और सहयोग दिखाते हैं तो छात्रों में सामाजिक अनुकूलन और आत्मविश्वास का स्तर बढ़ता है।

4. डॉ. संजीव सिंह (2019) अपने अध्ययन "शिक्षक की सहानुभूति और विद्यार्थियों की मानसिक भलाई" में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सहानुभूतिपूर्ण शिक्षक छात्रों के भीतर आत्म-मूल्य और आत्म-सम्मान को विकसित करते हैं। अध्ययन के परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षकों का व्यक्तिगत सहयोग, परामर्श और संवेदनशील व्यवहार छात्रों की मानसिक दृढ़ता को सशक्त बनाता है।

5. डॉ. कविता वर्मा (2020) उन्होंने अपने शोध में यह बताया कि विद्यालयों में जहाँ शिक्षकों का व्यवहार प्रेरणादायक और संवादप्रक छोड़ता है, वहाँ छात्रों में सकारात्मक भावनाएँ, आत्मविश्वास, और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। उन्होंने यह निष्कर्ष दिया कि शिक्षक-छात्र संबंधों में भावनात्मक जुड़ाव मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक आधारशिला के समान है।

6. पाठक और श्रीवास्तव (2021) इन दोनों विद्वानों ने अपने संयुक्त अध्ययन "विद्यालयों में सामाजिक-भावनात्मक वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य" में पाया कि शिक्षक की भूमिका विद्यालय के वातावरण को मानसिक रूप से स्वस्थ बनाने में निर्णायक है। उनका मानना है कि यदि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत संपर्क बनाए रखते हैं और उनकी समस्याओं को समझते हैं, तो छात्रों में न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन सुधरता है बल्कि मानसिक तनाव भी कम होता है।

7. डॉ. सुषमा पांडे (2022) "शिक्षक के व्यक्तित्व गुण और विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य" नामक अध्ययन में उन्होंने पाया कि शिक्षक का धैर्य, संवेदनशीलता, तथा विनम्रता जैसे गुण छात्रों में मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षकों के व्यक्तित्व गुण विद्यार्थियों की आत्म-धारणा और आत्म-नियंत्रण क्षमता को प्रभावित करते हैं।

8. डॉ. राजीव कुमार (2023) अपने नवीनतम अध्ययन "शिक्षक-छात्र संबंधों का मानसिक स्वास्थ्य में योगदान" में उन्होंने यह पाया कि आधुनिक विद्यालयी जीवन में जहाँ तक नीकी शिक्षण और परीक्षा के दबाव ने छात्रों पर मानसिक तनाव बढ़ाया है, वहाँ शिक्षक-छात्र का मानवीय संबंध एक मानसिक सहारा प्रदान करता है। उनका निष्कर्ष था कि शिक्षक की सकारात्मक प्रतिक्रिया (positive reinforcement) विद्यार्थियों की चिंता और अवसाद को कम करती है।

3. कार्यविधि

3.1 अनुसंधान की रूपरेखा

वर्तमान अध्ययन में **वर्णनात्मक एवं सहसंबंधात्मक (Descriptive and Correlational)** अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि शिक्षक-छात्र संबंधों की गुणवत्ता का विद्यालयीन छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है। अध्ययन का स्वरूप मात्रात्मक (Quantitative) रखा गया, जिसमें सर्वेक्षण विधि (Survey Method) के अंतर्गत प्रश्नावली के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया।

3.2 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में उत्तर प्रदेश राज्य के विभिन्न सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8वीं से 10वीं तक के छात्र-छात्राएँ सम्मिलित किए गए। इन छात्रों की आयु 13 से 17 वर्ष के बीच थी। यह आयु-समूह इसलिए चुना

गया क्योंकि यह अवस्था किशोरावस्था की प्रारंभिक अवस्था है, जिसमें मानसिक स्थिरता और भावनात्मक परिपक्तता तेजी से विकसित होती है।

3.3 नमूना चयन

नमूना चयन के लिए **यादचिक नमूना पद्धति (Random Sampling Method)** का उपयोग किया गया। कुल **200 विद्यार्थियों** का चयन किया गया, जिनमें 100 लड़के और 100 लड़कियाँ थीं। इनमें से 100 छात्र सरकारी विद्यालयों और 100 निजी विद्यालयों से थे। नमूने का वितरण इस प्रकार रहा:

प्रकार	संख्या	प्रतिशत (%)
सरकारी विद्यालय	100	50%
निजी विद्यालय	100	50%
कुल	200	100%

3.4 अध्ययन उपकरण (Tools Used)

अध्ययन में निम्नलिखित दो प्रमुख उपकरणों का प्रयोग किया गया—

(क) शिक्षक-छात्र संबंध मापक

यह मापक डॉ. बी. एन. सिंह (2016) द्वारा निर्मित है। इसमें 30 प्रश्न हैं जो पाँच बिंदुओं वाले लिकर्ट स्केल पर आधारित हैं। इसमें तीन आयामों — स्नेह, संवाद एवं सहयोग — का आकलन किया जाता है।

(ख) मानसिक स्वास्थ्य सूची

यह उपकरण डॉ. जगदीश और श्रीवास्तव (1988) द्वारा निर्मित है, जिसमें 56 प्रश्न हैं जो व्यक्ति के भावनात्मक स्थिरता, आत्म-संतुलन, सामाजिक समायोजन और जीवन दृष्टि का मूल्यांकन करते हैं।

3.5 डेटा संग्रह की प्रक्रिया

डेटा संग्रह हेतु चयनित विद्यालयों के प्राचार्यों से अनुमति प्राप्त की गई। छात्रों को उद्देश्य स्पष्ट रूप से बताया गया कि यह अध्ययन केवल शैक्षणिक उद्देश्य के लिए है और उनकी गोपनीयता पूर्ण रूप से सुरक्षित रहेगी। प्रश्नावली व्यक्तिगत रूप से वितरित की गई और छात्रों को निर्देश दिए गए कि वे अपनी भावनाओं के अनुसार उत्तर दें। प्रत्येक विद्यालय से लगभग 50 छात्रों का डेटा संकलित किया गया।

3.6 डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया

संग्रहित डेटा को सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए SPSS सॉफ्टवेयर में दर्ज किया गया। विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया—

1. **औसत (Mean)**
2. **मानक विचलन (Standard Deviation)**
3. **सहसंबंध गुणांक (Correlation Coefficient)**
4. **t-परीक्षण (t-test)** — लिंग और विद्यालय प्रकार के आधार पर तुलना के लिए।

3.7 परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ बनाई गई—

1. शिक्षक-छात्र संबंधों और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।
2. जिन छात्रों का शिक्षक-छात्र संबंध उच्च स्तर का होगा, उनका मानसिक स्वास्थ्य भी उच्च स्तर का होगा।
3. सरकारी और निजी विद्यालयों के छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर होगा।
4. लड़कों और लड़कियों के बीच शिक्षक-छात्र संबंधों की धारणा में कोई सांख्यिकीय अंतर नहीं होगा।

3.8 सीमाएँ

1. अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के चुनिंदा विद्यालयों तक सीमित था।
2. मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षक-छात्र संबंध का मूल्यांकन केवल स्व-प्रतिक्रिया (Self-Report) आधारित था।
3. सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव इस अध्ययन में प्रत्यक्ष रूप से नहीं मापा गया।

3.9 नैतिक विचार

सभी प्रतिभागियों की गोपनीयता सुनिश्चित की गई। किसी भी छात्र को अध्ययन में भाग लेने के लिए बाध्य नहीं किया गया। सभी डेटा का उपयोग केवल अनुसंधान उद्देश्य के लिए किया गया।

1. **परिणाम विश्लेषण** इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि शिक्षक-छात्र संबंधों की गुणवत्ता का विद्यालयीन छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। एकत्रित आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण औसत (Mean), मानक विचलन (SD), सहसंबंध गुणांक (r), तथा t-परीक्षण के माध्यम से किया गया। परिणामों को नीचे सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सारणियाँ (Tables) और विश्लेषण

सारणी - 1 शिक्षक-छात्र संबंधों और मानसिक स्वास्थ्य के बीच सहसंबंध

चर	N	सहसंबंध गुणांक (r)	महत्व स्तर (p)
शिक्षक-छात्र संबंध एवं मानसिक स्वास्थ्य	200	0.68	0.01

व्याख्या:

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शिक्षक-छात्र संबंधों और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच सहसंबंध गुणांक ($r = 0.68$) प्राप्त हुआ, जो 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह है कि जैसे-जैसे शिक्षक-छात्र संबंध सकारात्मक होते हैं, वैसे-वैसे छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर होता जाता है।

यह परिणाम इस परिकल्पना का समर्थन करता है कि शिक्षक-छात्र संबंधों का छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सारणी - 2 सरकारी और निजी विद्यालयों के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक विश्लेषण

विद्यालय का प्रकार	N	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	महत्व स्तर
सरकारी विद्यालय	100	152.30	18.42	2.47	0.05
निजी विद्यालय	100	160.85	16.97		

व्याख्या:

ऊपर दी गई सारणी से स्पष्ट है कि निजी विद्यालयों के छात्रों का औसत मानसिक स्वास्थ्य स्कोर (Mean = 160.85) सरकारी विद्यालयों के छात्रों की तुलना में अधिक है। प्राप्त t-मूल्य (2.47) 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण पाया गया, जो दर्शाता है कि विद्यालय के प्रकार के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है।

इसका तात्पर्य यह है कि निजी विद्यालयों के छात्रों को संभवतः शिक्षकों से अधिक संवाद, प्रोत्साहन और सहयोग मिलता है, जिसके कारण उनका मानसिक स्वास्थ्य बेहतर है।

सारणी - 3 लिंग के आधार पर शिक्षक-छात्र संबंधों का तुलनात्मक विश्लेषण

लिंग	N	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	महत्व स्तर
लड़के	100	85.60	10.25	1.18	Not Significant
लड़कियाँ	100	87.45	9.85		

व्याख्या:

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि लड़कियों का शिक्षक-छात्र संबंध औसत स्कोर लड़कों की तुलना में थोड़ा अधिक (87.45 बनाम 85.60) है, परंतु यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया ($t = 1.18$)। इसका अर्थ है कि शिक्षक-छात्र संबंधों की गुणवत्ता में लिंग के आधार पर कोई विशेष अंतर नहीं है।

चर्चा, निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य था — शिक्षक-छात्र संबंधों का विद्यालयीन छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का विश्लेषण करना। अध्ययन से प्राप्त परिणामों ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षक-छात्र संबंध छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रथम परिणाम से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षक-छात्र संबंधों और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच उच्च स्तर का **सकारात्मक सहसंबंध ($r = 0.68$)** पाया गया। इसका अर्थ है कि जितना संबंध सहयोगी और स्नेहपूर्ण होगा, उतना ही छात्र का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होगा। यह निष्कर्ष **डॉ. अरुणा शर्मा (2015)** तथा **डॉ. ओमप्रकाश मिश्रा (2017)** के अध्ययनों से मेल खाता है, जिनमें भी पाया गया कि शिक्षक का संवेदनशील व्यवहार विद्यार्थियों में आत्म-संतुलन और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

दूसरे परिणाम के अनुसार, **निजी विद्यालयों** के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य सरकारी विद्यालयों के छात्रों की तुलना में बेहतर पाया गया। यह संभवतः इस कारण है कि निजी विद्यालयों में शिक्षकों का व्यक्तिगत ध्यान और संवाद का अवसर अधिक होता है, जबकि सरकारी विद्यालयों में शिक्षक-छात्र अनुपात अधिक होने से व्यक्तिगत संवाद सीमित हो जाता है। परिणामतः निजी विद्यालयों में छात्रों को अधिक भावनात्मक समर्थन और मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

तीसरे परिणाम से यह ज्ञात हुआ कि **लिंग (Gender)** के आधार पर शिक्षक-छात्र संबंधों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। यह इस बात का संकेत है कि आज के समय में शिक्षक विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार रखते हैं और शिक्षा प्रणाली में लैंगिक समानता का वातावरण विकसित हो रहा है।

संपूर्ण विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि शिक्षक-छात्र संबंध छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक आधारशिला हैं। एक स्नेहपूर्ण, समझदार और सहयोगी शिक्षक न केवल छात्र के अध्ययन में सहायता करता है बल्कि उसे भावनात्मक स्थिरता, आत्मविश्वास और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। वहीं, नकारात्मक संबंध छात्रों में तनाव, भय और आत्महीनता की भावना को जन्म दे सकते हैं।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यालयीन स्तर पर शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ संवाद बढ़ाने, सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने और सहयोगी वातावरण विकसित करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इससे छात्रों का न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी सुदृढ़ होगा।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, ए. (2015). शिक्षक-छात्र संबंध और मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन. शिक्षा मनोविज्ञान पत्रिका, 12(2), 45–56.
2. मिश्रा, ओ. (2017). विद्यालयीन वातावरण और विद्यार्थियों का भावनात्मक विकास. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 8(1), 32–41.
3. वर्मा, एस. (2018). विद्यालयीन तनाव और शिक्षक की भूमिका. राष्ट्रीय शिक्षा शोध पत्रिका, 6(3), 25–37.
4. सिंह, आर. (2016). शिक्षक व्यवहार और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का अध्ययन. लर्निंग एंड डेवलपमेंट जर्नल, 5(2), 41–52.
5. गुप्ता, के. (2019). शिक्षक के संवेदनशील व्यवहार का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव. भारतीय मनोविज्ञान अनुसंधान पत्रिका, 14(1), 17–29.
6. पांडे, एस. (2014). विद्यालयीन शिक्षा में शिक्षक-छात्र संवाद का महत्व. शैक्षिक दृष्टिकोण, 10(4), 63–72.
7. चौधरी, ए. (2020). शैक्षिक वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य का पारस्परिक संबंध. भारतीय सामाजिक विज्ञान जर्नल, 9(3), 22–33.
8. जोशी, एम. (2013). शिक्षक की भूमिका छात्रों के भावनात्मक विकास में. मनोविज्ञान समीक्षा, 7(2), 48–59.
9. द्विवेदी, आर. (2018). विद्यालयीन तनाव, आत्मसम्मान और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन. आधुनिक शिक्षा अनुसंधान, 11(1), 35–44.
10. तिवारी, डी. (2016). शिक्षक-छात्र परस्पर क्रिया और मानसिक स्वास्थ्य का संबंध. शिक्षा संवाद, 4(3), 50–60.
11. श्रीवास्तव, पी. (2017). विद्यालयीन जीवन में शिक्षक के सहायक व्यवहार का महत्व. बाल एवं किशोर अध्ययन पत्रिका, 3(1), 15–27.
12. अग्रवाल, आर. (2019). भावनात्मक बुद्धि और शिक्षक-छात्र संबंध. मानसिक स्वास्थ्य पत्रिका, 8(2), 12–23.
13. सक्सेना, एन. (2021). विद्यालयीन परिवेश में शिक्षक की सहानुभूति का विद्यार्थियों पर प्रभाव. शिक्षा मनोविज्ञान जर्नल, 15(2), 30–42.

14. नंदन, वी. (2018). मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षकीय सहयोग का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय मनोविज्ञान परिप्रेक्ष्य, 13(3), 27–39.
15. भारद्वाज, एस. (2020). विद्यालय में सहयोगात्मक शिक्षण और विद्यार्थियों का मानसिक संतुलन. शिक्षा के आयाम, 6(4), 44–56.
16. सिंह, जे. (2015). अभिप्रेरणा, आत्मविश्वास और शिक्षक-छात्र संबंध. मनोविज्ञान आज, 9(1), 20–33.
17. चौहान, पी. (2016). विद्यालयी संस्कृति और छात्रों का मनोवैज्ञानिक विकास. सामाजिक अध्ययन पत्रिका, 11(2), 38–50.
18. अवस्थी, ए. (2018). विद्यालयीन शिक्षा में शिक्षक की भूमिका और मानसिक स्वास्थ्य. शिक्षा समीक्षा, 12(3), 17–29.
19. कुमारी, आर. (2019). शिक्षक के सहयोगात्मक व्यवहार का विद्यार्थियों के तनाव स्तर पर प्रभाव. भारतीय बाल मनोविज्ञान, 10(2), 24–35.
20. मेहता, एल. (2020). सकारात्मक शिक्षक व्यवहार और विद्यार्थियों की आत्म-धारणा. भारतीय शैक्षणिक अनुसंधान, 14(1), 10–21.
21. त्रिपाठी, ए. (2021). विद्यालयीन संबंधों की गुणवत्ता और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन. राष्ट्रीय मनोविज्ञान समीक्षा, 16(2), 29–40.
22. ठाकुर, वी. (2022). विद्यालयीन शिक्षण में संवेदनशीलता और सहानुभूति का प्रभाव. भारतीय शिक्षा परिप्रेक्ष्य, 8(1), 33–45.